अपने सोचे हुए मंजिल पर अगर लोग हस नहीं रहे है तो आपकी मंजिल बहुत छोटी है।
– अज्ञात

दुनिया की हर अर्थव्यवस्था परेशान

बीमारी की धमक कम पड़ने के साथ रिकवरी कुछ देशों और कुछ सेक्टरों में ही आ रही है। यह आगे भी दिखेगी, लेकिन आईएमएफ के मुताबिक यह रिकवरी न केवल आंशिक होगी बल्कि उतार–चढ़ाव वाली भी होगी।

ममता तिवारी।।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की सालाना बैठक वॉशिंगटन में जिन हालात में और जिन चुनौतियों के बीच हो रही है, उनकी गंभीरता जगजाहिर है। 12 अक्टूबर से शुरू होकर 18 अक्टूबर तक चलने वाली इस बैठक से निकले नतीजों की जानकारी बैठक संपन्न होने के बाद ही मिल सकेगी, लेकिन इस बीच बुधवार को आईएमएफ की मैनेजिंग डायरेक्टर क्रिस्टैलिना जॉर्जिएवा ने वर्चुअल मीडिया कॉन्फ्रेंस में जो बातें रखीं वे भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। उनसे यह साफ हो जाता है कि जिस संकट से दुनिया गुजर रही है उसके कई आयाम अभी खुलने बाकी हैं। दुनिया की हर अर्थव्यवस्था परेशानी से गुजर रही हो, ऐसे मौके ज्ञात इतिहास में विरले ही आए हैं लेकिन अभी स्थिति ऐसी ही है।

साल 2020 में ग्लोबल अर्थव्यवस्था का आकार 4.4 फीसदी छोटा होगा। यही नहीं, कोविड–19 महामारी के चलते अगले पांच वर्षों में उत्पादन में गिरावट से लगभग 28 लाख करोड़ डॉलर के नुकसान का अंदेशा है। जाहिर है, पिछले महीनों में देखे गए थोड़े बेहतर नतीजों से ज्यादा उत्साहित नहीं हुआ जा सकता। बीमारी की धमक कम पड़ने के साथ रिकवरी कुछ देशों और कुछ सेक्टरों में ही आ रही है। यह आगे भी दिखेगी, लेकिन आईएमएफ के मुताबिक यह रिकवरी न केवल आंशिक होगी बल्कि उतार–चढ़ाव वाली भी होगी। कुछ जानकार इसे ज्ञ–शेप्ड रिकवरी बता रहे हैं, जिसका मतलब यह हुआ कि एक ही समय में कुछ देशों और सेक्टरों में हालात सुधरते नजर आ सकते हैं तो कुछ अन्य देशों और सेक्टरों में स्थिति लगातार नीचे जा सकती है। इसे रिकवरी माना भी जाए या नहीं, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। बड़ा सवाल यह है कि आखिर इन स्थितियों से उबरने के लिए हम कुछ कर सकते हैं या नहीं, और कर सकते हैं तो क्या।

मीडिया कॉन्फ्रेंस में क्रिस्टैलिना जॉर्जिएवा ने जो तीन सुझाव रखे हैं वे गौर करने लायक हैं। पहला, बीमारी से निपटना, दूसरा लचीली और समावेशी अर्थव्यवस्था का निर्माण और तीसरा कर्जों पर ध्यान देना। पहले सुझाव पर तो कोई बहस ही नहीं है, पर अर्थव्यवस्था को लचीली और समावेशी बनाने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। न केवल नई स्थितियों के अनुरूप नए प्रॉजेक्ट्स को प्रोत्साहित करने के मौलिक तरीके सोचने होंगे बल्कि उस तरफ बढ़ने की इच्छा और कौशल रखने वाले लोगों की पहचान कर उनकी असुरक्षा दूर करने के जतन भी करने होंगे। तीसरा, कर्ज का मामला इस अर्थ में खास है कि फिलहाल इसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं है। लेकिन 2021 में वैश्विक कर्ज ग्लोबल जीडीपी के 100 फीसदी की रेकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच जाने का अनुमान है। यही नहीं, तमाम सरकारें लंबे समय तक दोनों हाथों से कर्ज लेने को मजबूर हैं। सोचने की बात है कि ये कर्जे अगर समय से वापस नहीं हुए तो क्या होगा। एक बात तय है कि अभी के समय में एक ही चीज है जो दुनिया को इन विषम परिस्थितियों से बाहर ला सकती है। वह है अधिक से अधिक आपसी सहयोग और सामंजस्य।

अंत ब्रह्म

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

ब्रह्मरू हमारे पुराणों में आदि एवं अंत ब्रह्म से ही माना गया है। ब्रह्म एक ही होता है जो सत्य एवं सनातन है। कहा गया है – एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति। अर्थात, ब्रह्म एक ही है, दूसरा कोई नहीं। अश्विनौरू ये अश्विनीकुमारों का प्रतिनिधित्व करता है जो दो होते हैं – नासत्य एवं दसरा। नासत्य सूर्योदय एवं दसरा सूर्यास्त का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये ३३ कोटि देवताओं में से एक हैं। यही दोनों भाई महाभारत में माद्रीपुत्र नकुल एवं सहदेव के रूप में जन्मे थे। त्रिगुणारू ये प्रत्येक जीव के तीन गुणों – सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन तीनों गुणों का मिश्रण एवं एक गुण की प्रधानता सभी जीवों में होती है। केवल श्रीहरि विष्णु इन तीन गुणों से परे, अर्थात त्रिगुणातीत माने जाते हैं। चतुर्वेदाः ये परमपिता ब्रह्मा द्वारा रचित चारो वेदों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।

संपादकीय

सबसे कमजोर कड़ी

पश्चिम बंगाल में अगले साल अप्रैल में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले बीजेपी अभिषेक बनर्जी को विवादों के केंद्र में लाने की कोशिश कर रही है। बीजेपी को लगता है कि तृणमूल कांग्रेस की सबसे कमजोर कड़ी अभिषेक बनर्जी हैं, जिनके माध्यम से वे ममता के किले को भेद सकते हैं। चूंकि बीजेपी के पास ममता बनर्जी के कद का कोई नेता राज्य में नहीं है, पार्टी अभिषेक को बंगाल का अगला सीएम बताकर गोल पोस्ट को बदलने की जुगत में है। ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी को बीजेपी इतना पसंद क्यों कर रही है, यह टीएमसी में अभिषेक के लगातार बढ़ते ग्राफ और आसपास उठे विवादों को देखकर समझा जा सकता है। एक दशक से राजनीति में सक्रिय अभिषेक बनर्जी दो बार लोकसभा सांसद बन चुके हैं। पिछले साल लोकसभा चुनाव से ठीक पहले वे तब विवाद में फंसे थे, जब कोलकाता हवाई अड्डे पर उनकी पत्नी के पास से महंगे गहने और सोने पाए जाने का आरोप लगा। पिछले कुछ सालों में उन पर कई मौकों पर सियासी रूप से नुकसान पहुंचाने वाले बयान देने का भी आरोप लगा। पार्टी के अंदर मनमानी करने का भी आरोप लगा। ममता बनर्जी की सादगी वाली छवि भी अभिषेक के कारण प्रभावित हुई। लेकिन इससे उनके रुतबे में कोई कमी नहीं आई। टीएमसी के जानकार सूत्रों के अनुसार आगामी विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी की पूरी रणनीति के पीछे वही काम कर रहे हैं और उन्होंने एक तरह से नंबर दो की पोजिशन हासिल कर ली है। सूत्रों के अनुसार चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर को ममता बनर्जी के साथ जोड़ने में अभिषेक की अहम भूमिका रही।

तेजस्वी सूर्या को बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा की नई टीम में तब अहम जगह मिली, जब पूनम महाजन को हटाकर उन्हें बीजेपी युवा मोर्चा का प्रमुख बना दिया गया।

विवादित बयानों के युवा सेंटर

नरेंद्र नाथ।।

देश की राजनीति में इस वक्त दो नाम चर्चा में हैं। एक तो बेंगलुरु से बीजेपी के युवा सांसद तेजस्वी सूर्या हैं, जिनकी पहचान मुस्लिम विरोधी ट्वीट्स और लगातार दिए जाते विवादित और भड़काऊ बयानों के जरिए बनी। बीजेपी ने उन्हें युवा मोर्चा का प्रमुख बनाया है। दूसरे हैं पश्चिम बंगाल से अभिषेक बनर्जी, जो ममता बनर्जी के भतीजे भी हैं।

तेजस्वी सूर्या को बीजेपी अपनी नई पीढ़ी के सबसे अग्रणी नेता के रूप में प्रॉजेक्ट कर रही है। उसी क्रम में कर्नाटक से 29 साल के इस युवा सांसद को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में सक्रिय होने को कहा गया है। तेजस्वी सूर्या को बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा की नई टीम में तब अहम जगह मिली, जब पूनम महाजन को हटाकर उन्हें बीजेपी युवा मोर्चा का प्रमुख बना दिया गया। बेंगलुरु की जिस सीट से वे सांसद हैं वहां अधिकतर आईटी सेंटर्स हैं, जहां देश भर से आए युवा काम करते हैं। तेजस्वी सूर्या सोशल मीडिया पर भी बीजेपी के सबसे चर्चित युवा नेताओं में हैं। उनके कुछ ट्वीट कभी–कभी विवाद में भी आते रहे हैं। कुछ महीने पहले 2012 में किए गए उनके कुछ मुस्लिम विरोधी ट्वीट्स विवाद में आ गए थे, जिसका असर

मुस्लिम देशों तक देखा गया था। बाद में उसे डिलीट कर दिया गया। उनके बयानों पर भी कई बार विवाद हो चुका है। अभी बेंगलुरु के टेरर हब बनने वाला बयान भी विवादों में है। सूत्रों के अनुसार वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह, दोनों के पसंदीदा हैं। ससंद में भी उन्हें अब अहम मुद्दों पर बोलने को उतारा जा रहा है। बताते हैं कि आम चुनाव से पहले पीएम मोदी ने उनका एक वायरल विडियो देखा था, जिसके बाद उन्होंने उन्हें टिकट देने का मन बनाया। वह नई पीढ़ी में बीजेपी के सबसे आक्रामक वक्ता भी समझे जाते हैं। हालांकि पार्टी के अंदर उनके सबसे बड़े पैरवीकार बीएल संतोष माने जाते हैं, जो खुद भी कर्नाटक से ही हैं। दरअसल कर्नाटक में बेंगलुरु की जिस लोकसभा सीट से उन्हें टिकट दिया गया, वहां इसकी होड़ में सबसे आगे पूर्व केंद्रीय मंत्री अनंत कुमार की पत्नी मानी जा रही थीं। अनंत कुमार का निधन कुछ महीने पहले ही हुआ था। उन्होंने कांग्रेस के कद्दावर नेता बीके हरिप्रसाद को बड़े अंतर से हराया। राजनीति में आने के साथ तेजस्वी सूर्या सफल वकील बनने की राह पर भी थे। एलएलबी करने के बाद वे कर्नाटक हाई कोर्ट में पेशवर वकील बन चुके थे। कर्नाटक के सीएम येदियुरप्पा पर लगे करप्शन केस में वे उनके वकीलों की टीम में बतौर जूनियर वकील शामिल थे। बचपन से ही बेंगलुरु में रहने वाले तेजस्वी सूर्या के पिता सरकारी सेवा में थे। उनके करीबियों के अनुसार वे शुरू से राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित रहे। करगिल युद्ध के दौरान मात्र 10 साल की उम्र में शहीदों के नाम पर डोनेशन जमा किया था।

राजनीति में आने से पहले वे कई स्वंयसेवी संगठनों से भी जुड़े थे। बीजेपी की छात्र इकाई एबीवीपी में भी शामिल हुए, जहां से उनके राजनीतिक सफर की औपचारिक शुरुआत हुई। तेजस्वी सूर्या दो साल पहले भी तब विवाद में आए थे, जब मीटू मूवमेंट के दौरान उन पर पुराने सहयोगियों ने आरोप लगाए थे। हालांकि तेजस्वी ने उसे विपक्ष की साजिश बताया था। संसद में पार्टी की आवाज बनने से लेकर सरोकार की राजनीति करने का रुख दिखाया है। वे पिछले कुछ महीनों से बंगाल के सुदूर क्षेत्रों में घूमकर लोगों से मिल–जुल रहे हैं। माना जा रहा है कि वे न सिर्फ विपक्षियों को, बल्कि पार्टी के अंदर भी संदेश देना चाहते हैं कि वे सियासी पोजिशन अपने दम पर हासिल कर रहे हैं और उनका अपना जनाधार है।

सूडोकु नवताल- 5506

सरल

	4		7		1			3
3		5		4		1		
	2				8			
4		3						
	8			2			1	
						8		6
			2				3	
		9		8		2		4
1			4		6		9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5505 का हल

9	2	7	4	8	6	5	3	1
5	1	6	3	2	9	4	8	7
3	4	8	7	1	5	9	6	2
8	3	4	9	5	1	2	7	6
7	6	5	8	4	2	3	1	9
1	9	2	6	3	7	8	5	4
6	7	3	2	9	8	1	4	5
2	8	1	5	7	4	6	9	3
4	5	9	1	6	3	7	2	8

अपना ब्लॉग

हल तलाशना बहुत जरूरी

मोहन। आईडी बनवा भी ली तो विडियो बनाना और उसे भेजना इनके लिए आसान काम नहीं है क्योंकि ये तकनीक जानकारी से अनभिज्ञ हैं। दूसरी बात, बिना समूह और शारीरिक स्पर्श के इनकी कला, जैसे कालबेलिया नृत्य, आदिवासी नृत्य, कंजर का चकरी नृत्य आदि संभव ही नहीं है। इस तरह सैकड़ों समुदाय सरकारी योजना के लाभ से बाहर निकाल दिए गए। यदि सरकार की मंशा सहायता देने की है तो लोक कलाकारों के खाते में सीधे पैसा डाला जा सकता है। क्या राजस्थान सरकार के पास अपने लोक कलाकारों की सूची नहीं है? अन्य राज्यों के लोक कलाकारों की स्थिति भी कुछ बेहतर नहीं है। कुछ दिनों पहले उत्तर–प्रदेश में बहुरूपिया कला दिखाने के लिए कुछ निजी संस्थाओं को ठेके दिए गए। मध्य–प्रदेश और छत्तीसगढ़ की सरकारों ने भी लोक कलाकारों के साथ ऐसा ही बर्ताव किया है। इससे जुड़े कुछ गंभीर सवाल हैं जिनका हल तलाशना बहुत जरूरी है।